

कम्बलेश्वरग्राम m. N. pr. eines Dorfes RĀGA-TAR. 8, 254.
 कम्बलोदरि m. N. pr. eines Mannes; pl. SĀṢK. K. 184, a, 1.
 कम्बु 1) कम्बुश्च तारानधमन् BHATT. 3, 34. घोवा कम्बुनिचिता VARĀH. BRH. S. 70, 5. रेखात्रयाङ्किता घोवा कम्बुघोविते कथ्यते HALĀJ. 2, 362.
 कम्बुघोव adj. VARĀH. BRH. S. 68, 32. 69, 27.
 कम्बुकेश्वरतीर्थ n. N. pr. eines Tirtha Verz. d. Oxf. H. 66, b, 27.
 कम्बुघोव m. KATHĀS. 60, 469.
 कम्बुक, °काः शरभृष्टयः ÇĀNTIKALPA 13.
 कम्बोज 1) Verz. d. Oxf. H. 339, b, 40.
 कम्बोजमुण्ड vgl. u. कम्बोज 2) a).
 कम्ब 1) HALĀJ. 2, 226. verliebt BHATT. 4, 20. 7, 24. — 2) MĀLATĪM. 132, 14. पीनस्तनस्वितताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी Spr. 3638.
 कम्बत् KĀTJ. ÇR. 24, 3, 21.
 कायाधु = कायाधू Schol. zu TBR. 1, 5, 9, 1. — Vgl. कायाधव.
 कायाशुभिय (von काया शुभा, dem Anfang von RV. 1, 163) n. N. eines Sāman PĀNĀV. BR. 24, 14, 5. अग्रस्त्यस्य ऽयं शस्यम् KĀTJ. 34, 4.
 कट्यट = कैट्यट, कैट HALL 164.
 1. कर, कुर्मि R. 7, 78, 20. 4) प्रमदाद्विग्रहे कृत्वा Frauengestalt annehmend R. 2, 91, 49. यस्मिन्नात्मभुवः परा पि पुरुषश्चेक्रे भवायास्पदम् in dem Vishṇu seinen Sitz nahm um geboren zu werden ÇĀK. 186. — 7) विमुक्तकवचस्तत्र वध्यमानो ऽपि रावणिः । त्रिदशैः समुह्यवीर्येन चकार च किं च न ॥ so v. a. er machte sich Nichts daraus (किंचन किमपि भयमित्यर्थः Schol.) R. 7, 29, 23. — 8) तत्कार्मुकम् — न शेकुर्मनसापि कर्तुम् so v. a. spannen MBu. 1, 7022. — 9) स तथेति ततः कृत्वा (कृत्वा घञीकृत्येत्यर्थः Schol.) राघवे वाक्यमब्रवीत् «so sei es» sagend R. 7, 38, 6. 6, 82, 56. अश्वेलूकस्य भवनं गृध्रः पापविनिश्चयः । ममेदमिति कृत्वासौ कलहे तेन चाकरोत् 7, 39, 3. — 10) बहोः समा अकर्मन्तरस्मिन् RV. 10, 124, 4. — 12) रत्नाकरः किं कुरुते स्वरत्नैर्विन्ध्याचलः किं करिभिः करोति Spr. 2384. — 13) कुर्मः कित्त्वपमेतेदेव हृदये कृत्वा wenn wir nur daran denken Spr. 3948. in der Sprache der Sūtra = आसाद्य Schol. zu KĀTJ. ÇR. 4, 4, 9. — 15) Z. 14 streiche 186. — 23) हा कथं नु करिष्यामि भर्तुस्तस्मादहं विना so v. a. wie wird es mir ergehen? R. 7, 24, 14. — caus. vom desid. ungenau st. desid. vom caus. Etwas thun zu lassen beabsichtigenः किञ्चिच्छीकर्षणम् BuĀg. P. 10, 48, 12. = कारयितुमिच्छन् Schol. — intens. Z. 3 füge RV. 3, 38, 9 nach P. 7, 4, 65 hinzu.
 — व्याति (ungenau st. अतिवि) pass. eine grosse Veränderung an sich erfahren, in grosse Aufregung gerathen BuĀg. P. 11, 11, 15.
 — अधि 1) वैद्यसोवत्सराचार्याः — अधिकृताश्चरः als Späher angestellt Spr. 2900. अथो समर्थो विद्वानधिक्रियते SARVADARÇANAS. 124, 16. — 2) Etwas zum Gegenstand der Behandlung machenः योगानुशासनं शास्त्रमधिकृतं वेदितव्यम् SARVADARÇANAS. 138, 22.
 — अनु 1) vgl. Spr. 1427. — 2) es Jmd (gen.) gleichthunः अनुकुरुतः खलसुननावग्रिमपाश्चात्पभागयोः सूच्याः Spr. 3480. es Jmd (acc.) nachmachen BuĀg. P. 11, 22, 52. — अनुकृत PĀNĀT. III, 270 wohl fehlerhaft für अधिकृतः vgl. Spr. 2186. — caus. BuĀg. P. 11, 22, 52.
 — अप 2) mit dem gen. der Person BuĀg. P. 10, 44, 3. mit dem loc.ः स्वल्पमप्यप्रकुर्वन्ति ये पापाः पृथिवीपते Spr. 3334. किमिव वत नात्मन्यपकृतम् Spr. अनावर्तो im 4ten Th. mit dem acc.ः तं तु भीमभटं ज्येष्ठं स-

वर्हारमपाकरोत् er strafte ihn der Art, dass er ihm Alles fortnahm, KATHĀS. 74, 60. कृतापकृतस्य gut gethan und verfehlt Spr. 3874.
 — प्रत्यप vgl. प्रत्यपकार.
 — अपि zurechtmachen, passend herrichten TBR. 1, 4, 3, 3. PĀNĀV. BR. 13, 3, 5. TS. 6, 6, 2, 1. auch wohl 2, 6, 3, 1.
 — अघ nach unten thun, — richtenः मूले ह्यवकृते सदा सिते (lies सिते सदा des Versmaasses wegen) प्रज्ञालवारिणा KATHĀS. 94, 44. Vielleicht अघाकृते oder अघक्रिते zu lesen.
 — आ 3) Jmd Etwas anthunः पराकृतं कर्म von einem Feinde angethan VARĀH. BRH. S. 3, 15.
 — अन्वा mitgebenः दुहित्वा उन्वमानायि ÇĀNKH. BR. 8, 1.
 — अपा 1) nach WEBER KĀTJ. ÇR. 22, 3, 15. 17 und PĀNĀV. BR. 17, 11, 2 zum Geschenk absondern; vgl. Ind. St. 5, 407.
 — उपा 4) उपाकर्तुम् an Etwas gehen BuĀg. P. 3, 6, 35 erklärt der Schol. durch साकल्येन निरूपयितुम्.
 — प्रत्युपा vgl. प्रत्युपाकरण.
 — समुपा, NĪLAK. erklärt समुपाकृत्य durch प्रसाध्य.
 — निरा 2) Jmd abweisen, zurückweisen, beseitigen KATHĀS. 38, 6. 60, 159. verjagenः तन्निराकुरु देशातं देहाद्यार्थिमात्मजम् 70, 11. निराकृतं verdrängt RV. PRĀT. 11, 30. — 3) SARVADARÇANAS. 72, 7.
 — प्रा wegtreiben KĀTJ. 29, 2. 30, 10.
 — व्या 1) Comm. zu TS. 1, 23, 4 v. u. व्याकरोन्नामत्रपे SARVADARÇANAS. 31, 13. — 2) आकालिकशब्दार्थो व्याकृत एव KULL. zu M. 4, 103.
 — उप 2) Etwas fördern SĀH. D. 631. — 7) b) दारिद्र्योपस्कृत (so die ältere Ausg.) so v. a. ein Bettler SĀH. D. 173, 14. — d) Z. 2 lies Sorge st. Sage. — Vgl. निरूपस्कृत.
 — प्रत्युप vgl. प्रत्युपकार fgg.
 — निस् 2) Z. 3 lies अनिष्कृतिनस्. — 3) TBR. 1, 4, 3, 4. — 6) vergeltenः एतदेव हि सच्छिष्यैः कर्तव्यं गुरुनिष्कृतम् Vergeltung (= प्रत्युपकार Schol.) BuĀg. P. 10, 80, 41.
 — विनिस् caus. herstellen —, ausbessern lassenः यानम् KAUC. 77.
 — परा beseitigen (als etwas Falsches) SARVADARÇANAS. 136, 22.
 — परि 1) नालीढया परिकृतं भक्षयित MBu. 13, 5044, ed. Bomb.; der Schol. dagegen hat die Lesarten नालीढया परिकृतं und नालीढं नापरिकृतं vor Augen gehabt. Hier seine Erklärungenः आलीढया रजस्वल्या परिकृतं संपादितम् (also = परिष्कृतः), आलीढं गवाध्याघ्रातं अपरिहितं परिषेचनक्रीनम्. — Vgl. परिकर, परिकर्तार, परिकर्मन्.
 — प्र 1) स्वार्थं प्रकुर्वन्ति परस्य चार्थम् betreiben Spr. 4311. सद्भिः सद्भिः प्रकुर्वन्ति Umgang haben mit 3148. — 3) abthun, tödten (vgl. 4. कर)ः पद्मवश्यं प्रकृतव्यं पितृनुदिष्य साधिनाम् । प्रकुर्वन्मिहि गो सम्पक्सर्व एव समाहिताः ॥ HARIV. 1193. fg. (व्याधाः) तावन्मात्रं प्रकुर्वन्ति यावता प्राणधारणम् 1204. — 3) एको धर्मं प्रकुरुते मनः R. ed. Bomb. 6, 6, 9. — 11) füge bei zum Gegenstand der Besprechung machen.
 — विप्र BuĀg. P. 10, 67, 15 (med.). विप्रकृतं कर्म eine Angelegenheit, die auf Hindernisse gestossen ist, Spr. 4048. — Vgl. विप्रकार u. s. w.
 — प्रति 2) कृते प्रतिकृतं प्राज्ञैः प्रतिनिर्यातनं स्मृतम् HALĀJ. 4, 80. — Vgl. कृतप्रतिकृत, प्रतिकर u. s. w.
 — वि 1) विकृत VARĀH. BRH. S. 30, 9. °गति 3, 5. अविकृतगति 4, 31, 9,